ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 124-125
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

प्रसिद्ध बौद्ध मठों की कला का एक परिचय

उमाशंकर प्रसाद

एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, श0 म0 प0 राज0 महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received- 20.11.2018, Revised- 23.11.2018, Accepted - 26.12.2018 E-mail: umashankarprasad25@gmail.com

सारांश : "अत्तदीपाः भगथः अत्तषरणाः अत्तवग्गो द्वादसमो"

अपना दीपक स्वयं बनो और दूसरों की शरण में ना जाकर अपनी ही शरण में जाओ।

यह ज्ञान वाक्य उस महामानव की वाणी का भाग है जो बचपन में सिद्धार्थ तथा ज्ञान प्राप्ति के बाद 'तथागत बुद्ध' या 'भगवान बुद्ध' कहलाए। जिन्होंने अपने ज्ञान रूपी उपदेशों से दुनिया को देखने व समझने का एक नया नजरिया दिया। इस संसार में दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख का निवारण है, दुःख निवारण का मार्ग हैं। भगवान बुद्ध ने इन चार आर्य सत्यों को समझाया।

कुंजीभूत शब्द–त्तदीपाः, भगथः, अत्तषरणाः, अत्तवग्गो, द्वादसमो, शरण, ज्ञान, वाक्य, महामानव ।

भगवान बुद्ध का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व लुंबिनी नामक स्थान पर हुआ। वह एक शाक्यमुनि थे। उनका मन वास्तविक चीजों को खोजने के कारण विलासिता की वस्तुओं में नहीं लगा। यही कारण था कि वे अपनी सुंदर पत्नी यशोधरा व पुत्र राहुल को छोड़कर ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर निकल पड़े।

विभिन्न व्यक्तियों के संपर्क में आकर तथा कई स्थानों पर कठोर तपस्या करने के बाद भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई। अतः वे बुद्ध कहलाए। ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होंने पहला उपदेश सारनाथ में दिया जो 'धर्मचक्रपरिवर्तन' के नाम से प्रख्यात है।

धीरे धीरे भगवान बुद्ध की ख्याति फैलने लगी जिससे भारत ही नहीं अन्य कई देश भी इससे अछूते नहीं रहे।

सर सोनियर विलियम के मतानुसार – मानव जाति के धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास में बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण योगदान है। पूर्वी हिंदुस्तान में लगभग 5 शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध का उदय हुआ और यह अत्यंत वेग के साथ फैला तथा सैद्धांन्तिक प्रेरणा के बल पर इसका विकास हुआ।

अन्य कई देशों में भगवान बुद्ध का ज्ञान रूपी प्रकाश प्रज्वलित होने लगा, जो बौद्ध धर्म कहलाया। बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार नेपाल, वर्मा, कोरिया, चीन, जापान, कंबोडिया तथा भारत आदि देशों में हुआ।

अंत में यह महामानव अपनी ज्ञान रूपी ज्योति का प्रचार प्रसार करते हुए लगभग 483 ईसा पुर्व में 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर में मृत्यु को समर्पित हो गया। भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद उनकी वस्तुओ व अस्थियों पर कई विहार व बौद्ध स्तूप बनवाए गए, जो वर्तमान में बौद्ध धर्म के धार्मिक स्थलों में शामिल हैं।

यह सभी धार्मिक स्थल विदेशों में नेपाल, वर्मा, कोरिया, चीन, जापान, कंबोडिया में स्थित हैं तथा भारत में बौद्ध धर्म उत्तर भारत में प्रसारित हुआ। अतः भारत में बौद्ध धार्मिक स्थल इसी उत्तर भारत के भू–भाग पर ही स्थित है। जहां दुनिया के अन्य देशों से बुद्ध धार्मिक स्थलों के दर्शन हेतु आते हैं।

उत्तर भारत, भारत का उत्तरी क्षेत्र कहलाता है। इसके भौगोलिक अंगों में गंगा के मैदान और हिमालय पर्वतमाला आती है। यही पर्वतमाला भारत को तिब्बत और मध्य एशिया अंगों से पृथक करती हैं।

उत्तर भारत मौर्य, गुप्त, मुगल एवं ब्रिटिश साम्राज्यों का ऐतिहासिक केंद्र रहा है। भारत सरकार द्वारा परिभाषित उत्तरी और उत्तर मध्य क्षेत्र में जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश राज्य आते हैं।

इन सभी स्थानों पर कई कई बौद्ध मठ है जो अनुयायियों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। इन मठों में भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित कई कथाएं चित्रत हैं कहीं उन्हें जन्म लेते हुए चित्रित किया गया है, कहीं ज्ञान साधना में लीन बैठे दिखाया गया है, कहीं उपदेश देते, तो कहीं मृत्यु शैया पर लेटे चित्रित किया गया है।

हिमाचल प्रदेश में लगभग 8 मठ हैं जिनमें – पालपुंग शेराबिलिंग, जोंगसर मठ, की गोम्पा, चोकलिंग मठ, दोरजोंग मठ, रिवालसर, नाको मठ, शुंगलाखंग मठ प्रसिद्ध है। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में भी एक खूबसूरत व कई मंजिला बुद्ध टेंपल है, जिसे क्लेमेंट टाउन के नाम से भी जाना जाता है।

झारखंड का खीरी मठ इसकी पहचान बन चुका है जो 80 फीट उॅचा एक सप्तरत योजना के अनुरूप बनाया गया

मठ है। यह बोध गया के विश्व प्रसिद्ध मंदिर की प्रतिकृति हैं। इसमें बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा में बैठी हुई मूर्ति है।

छत्तीसगढ़ के सिरपुर 'श्रीपुर' में दुनिया का अब तक मिला सबसे बड़ा बौद्ध स्थल है। यहां के राजा के आमंत्रण पर भगवान बुद्ध यहां 3 माह तक रुके, इसी कारण ही यहां बौद्ध स्तूप, विहार व मूर्तियां पाई गई हैं।

मध्य प्रदेश का विश्व प्रसिद्ध 'सांची स्तूप' बहुत आकर्षक है। यहां ड्योढ़ी व तोरणों पर बड़े ही सुंदर चित्र अंकित है। सांची के अतिरिक्त 'उज्जैन स्तूप' जो बुद्ध की अस्थियों को संचित किए हुए 2500 वर्ष पुराना स्तूप है।

'भरहुत स्तूप' में बुद्ध को बौद्ध प्रतीकों के रूप में दर्शाया गया है। तथा 'ग्वालियर स्तूप' करीब 2200 साल पुराना बौद्ध स्तूप है।

बिहार का 'बोध गया मंदिर' जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया है यहां गौतम बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्ति पद्मासन की मुद्रा में है। 'तिब्बतियन मठ' इसमें बुद्ध के जीवन की घटनाओं के चित्र हैं। 'राजगीर स्तूप' बहुत आकर्षक है तथा 'नालंदा' प्राचीन काल का सबसे बड़ा बौद्ध विश्वविद्यालय था किंतु अब अवशेष ही शेष है।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी से 10 किलोमीटर दूर स्थित 'सारनाथ' यहां भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। यहां कई स्तूप हैं, जिनमे धम्मेख स्तूप, चौखंडी स्तूप, मूलकुटी विहार, धर्मराजिका स्तूप स्थित है।

'श्रावस्ती' जो भगवान बुद्ध का वर्षा ऋतु का सबसे पसंदीदा स्थल था यहां भी कई स्तूप, मठ स्थित है जिनमें चित्र चित्रित है। कुशीनगर में भगवान बुद्ध को जिस अवस्था 'लेटी हुई' में महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था उसी अवस्था में बुद्ध की प्रतिमा है।

कौशांबी से उत्खन्न के दौरान कई मूर्तियां, सिक्के व मिट्टी की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं।

'संकिसा' में सम्राट अशोक ने दो स्तंभ बनवाए जिसमें एक स्तम्भ के शीर्ष पर हाथी तथा दूसरे पर सिंह स्थित है। उत्तर भारत का एक और आकर्षण व रमणीय केंद्र शासित प्रदेश है जो पहले राज्य था, बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध स्थल है। जिसे 'रहस्यों की भूमि', 'दर्रों की भूमि' कहा जाता है वह है ''लद्दाख''।

लद्दाख की वायु स्वच्छ व निर्मल है, गगन को चूमते पहाड़ बहुत ही आकर्षक है तथा नीले आसमान का प्रतिबिंब दिखाती झीलें बहुत ही सुंदर है। जितना सुंदर लद्दाख का भौगोलिक दर्शन है उससे भी ज्यादा सुंदर यहां की कला है। जिसे देखने बहुत से अनुयायी आते हैं कुछ तो वापस चले जाते हैं किंतु कुछ हमेशा के लिए यही के होकर रह जाते हैं अर्थात बौद्ध धर्म ग्रहण कर बौद्ध भिक्षु बन जाते हैं तथा यही के मठों में कठोर जीवन यापन करके भी आत्मीय संतुष्टि प्राप्त करते हैं।

लद्दाख के शांत वातावरण में यहां की कला भली–भांति फली–फूली यहां की कला को सहेजते हैं हुए लद्दाख के कई मठ बहुत ही आकर्षक हैं –

'शांति स्तूप' शांति व समृद्धि का प्रसार करता है यहां बुद्ध की प्रतिमा धर्म चक्र चलाते हुए बनी है तथा बुद्ध के जन्म मृत्यु और शत्रुओं की पराजय को दर्शाया गया है।

'थिक्से मठ' स्थानीय भाषा में ठीक से का अर्थ थिक्से होता है 'पीला'। पीला होने के कारण इसका नाम थिक्से मठ पढ़ा। 12 मंजिला वाले इस मठ में कई भवन व बुद्ध की मूर्तियां हैं। प्रमुख मंदिर में बुद्ध की 14 मीटर उंची कांसे की मूर्ति है। दीवारों पर बनी कलाकारी अद्भुत है तथा बुद्ध के मुकुट की चित्रकारी अनूठी है।

'अल्ची मठ' यह लद्दाख का सबसे पुराना मठ है। इस मठ में बने 5 मंदिरों मेंचित्रकला द्वारा युद्ध परंपरागत परिधानों और बौद्ध धर्म को विस्तार से दर्शाया गया है, इस मठ का रंग रोगन व चित्रकारी दुर्लभ अनोखी है दीवारों पर मांडला चित्र चित्रत किए गए हैं। जो बेहद मनमोहक है।

'स्पीतुक मठ' यह बौद्ध के साथ–साथ हिंदुओं व सिक्खों की आस्था का केंद्र भी है, इसमें भगवती तारा की मूर्ति है। यहां 11 सिर वाली अवलोकतेश्वर तथा बुद्ध की एक सुंदर प्रतिमा स्थापित है।

'शंकर मठ' इस मठ की चित्रकारी अद्भुत है। यहां अवलोकितेश्वर तथा बोधिसत्व की एक प्रतिमा रखी गई है। इस प्रतिमा के 11 सिर्फ 1000 हाथ और प्रत्येक हाथ की हथेली पर आंखें हैं, जो बहुत ही सुंदर है।

लद्दाख की कला बहुत ही स्वर्णिम है। इस कला में कलात्मकता के साथ ही भावनात्मकता व मानवीयता की मूल भावना का यथार्थ रूप बुध की प्रतिमाओं में दिखाई पड़ता है। लद्दाख में आने के बाद भी बुद्ध कला का इतिहास परिवर्तित नहीं हुआ। यहां बुद्ध का शांत रुप, प्रसन्न रुप, उर्जावान रूप आदि सभी अत्यंत आकर्षक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा, अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 1968
2. धम्मपद : गाथा और कथा, दृष्टिकेश शरण,
3. बौद्ध, चन्द्रसेन, बौद्धों के आठ महातिर्थ, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
4. https:/hi.m.wikipedia.org
5. https:/hi.m.webdunia.com

*****